ISSN 2456-4753

प्लूटो

वर्ष 10 अंक 3

अगस्त सितम्बर 2025

मूल्य ₹ 75

तीन तिगाड़े काम बिगाड़े

किशोर पँवार
चित्र: राधेश्याम खैरवार

जब हिरन या भैंस सरीखे जीव घास चरते हैं तो कई पक्षी उन पर पनपे कीड़े-मकोड़ों की दावत उड़ाते हैं। इससे पक्षियों को लज़ीज़ खाना और भैंस या हिरन को राहत मिलती है। कुछ पक्षी इनके पीछे-पीछे चलते हैं। भैंस या हिरन जब घास चरते हैं तो घास में छिपे कीड़े-मकोड़े बाहर निकलते हैं। उड़ते हैं। और पक्षियों की दावत हो जाती है।

पीले मेंढक

राकेश रंजन | चित्र: ऋषि साहनी

पके पपीतों जैसे जल में
तैर रहे हैं पीले मेंढक

कीड़ों की दावतें उड़ाकर
फूले और गठीले मेंढक

सरदी-खाँसी हो जाएगी
कई दिनों से गीले मेंढक

मैंने कहा कि बाहर निकलो
निकले नहीं हठीले मेंढक

निकलो, पानी में साँपों के
रहते कई कबीले मेंढक

पर न मानते टरटर करते
बड़े अकल के ढीले मेंढक!

सोपान जोशी | चित्र: ऋषि साहनी

दिखने में ऊँट जिराफ का रिश्तेदार लगता है। दोनों ऊँचे-पूरे हैं। लम्बी-पतली टाँगें हैं। गर्दन भी लम्बी हैं। लेकिन दोनों रिश्तेदार हैं नहीं। जिराफ अफ्रीका का है। उसके पाँवों में खुर होते हैं। जैसे, गाय-भैंस-बकरी के होते हैं।

ऊँट अमरीका से है। उसके पाँव फैले रहते हैं। नीचे एक नर्म गद्दा होता है। इससे ऊँट एकदम ढीली रेत पर भी चल लेता है। तपती गर्म रेत पर भी। इस पैर में एक और खासियत है। वह घास को कुचलते नहीं हैं। इस तरह वो अपने भोजन का ध्यान रखते हैं। खुर वाले जानवर चलते हुए घास को जड़ से निकाल देते हैं। पर ऊँट घास के भविष्य को सँवारता है, अपने भविष्य को भी।

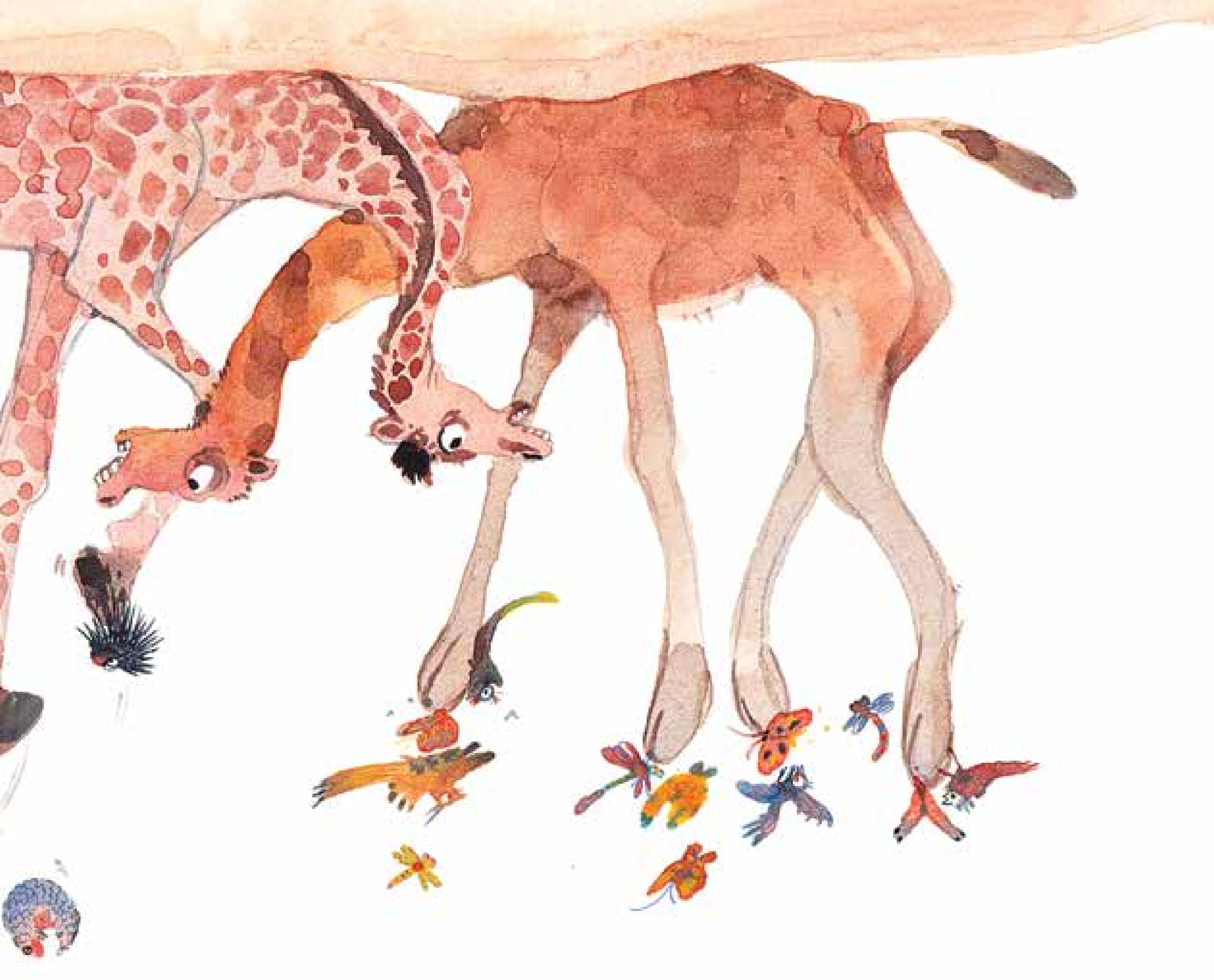

1955

क्या रास्ते बड़े होकर सड़क बनते हैं ?

चित्र: प्रोइति रॉय

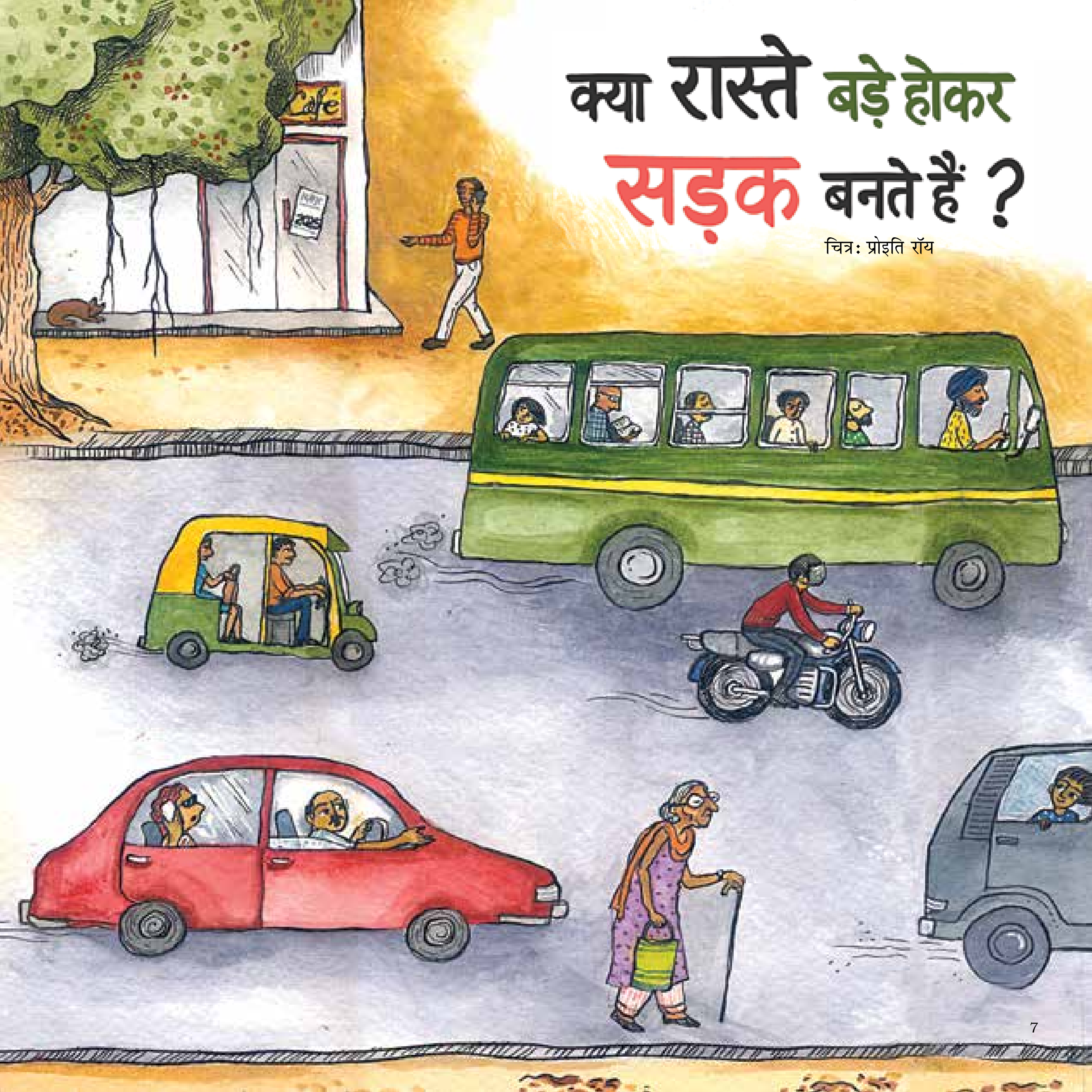

ओकुम

पंकज सैकिया

ओकुम में आपका स्वागत है। ओकुम का मतलब है घर। मैं मिशिंग समुदाय से हूँ। हमारा गाँव माजुली में है। हमारा घर आमतौर पर बाँस से बनाया जाता है। घर एक चबूतरे पर बनाते हैं। मेरा घर नदी के एकदम सामने है। हमारा घर बाँसों पर खड़ा है इसलिए कोई खास खतरा नहीं है।

इस घर के निचले हिस्से में माँ हैण्डलूम रखती है। वह मेखला बुनती है। हमारे जानवर भी यहीं रहते हैं। ओकुम के अलग-अलग हिस्सों के अलग अलग नाम होते हैं-

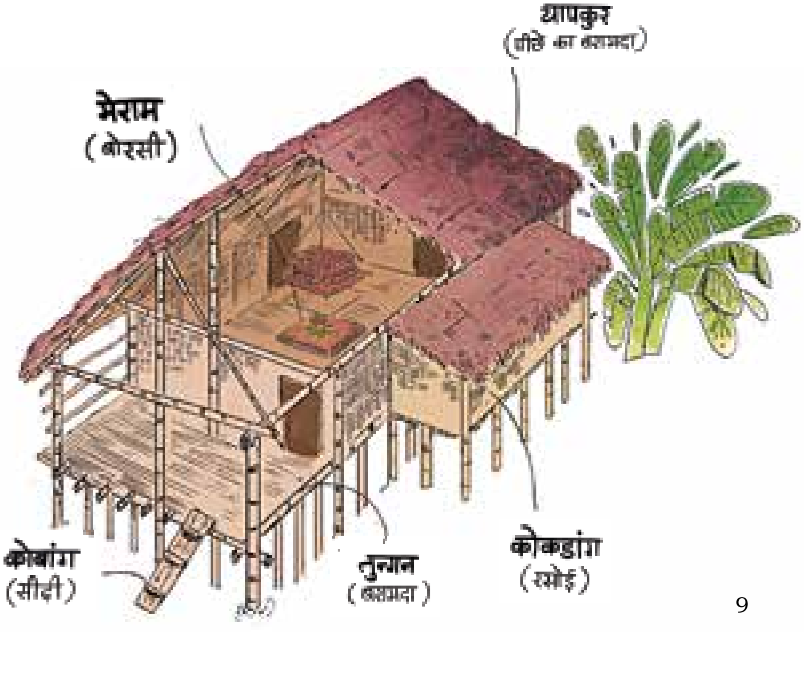

मेराम

यह हमारी खाने पकाने-खाने की जगह है। अइयो यानी मेरी दादी मुझे यहीं कहानियाँ सुनाती है। साथ-साथ में वो अपांग पकाती रहती हैं। अपांग चावल से बनता है। हमारे त्यौहारों में यह एक आम चीज़ है। इसमें पचासों तरह की जड़ी-बूटियाँ पड़ती हैं।

चूल्हे के ऊपर हम मांस को धुँधाते हैं। पकाते हैं। यह ओकुम की सबसे सुकून भरी जगह है। दिन भर की मशक्कत के बाद घर के सब लोग यहाँ जुटते हैं। दादी से कहानियाँ सुनते हैं।

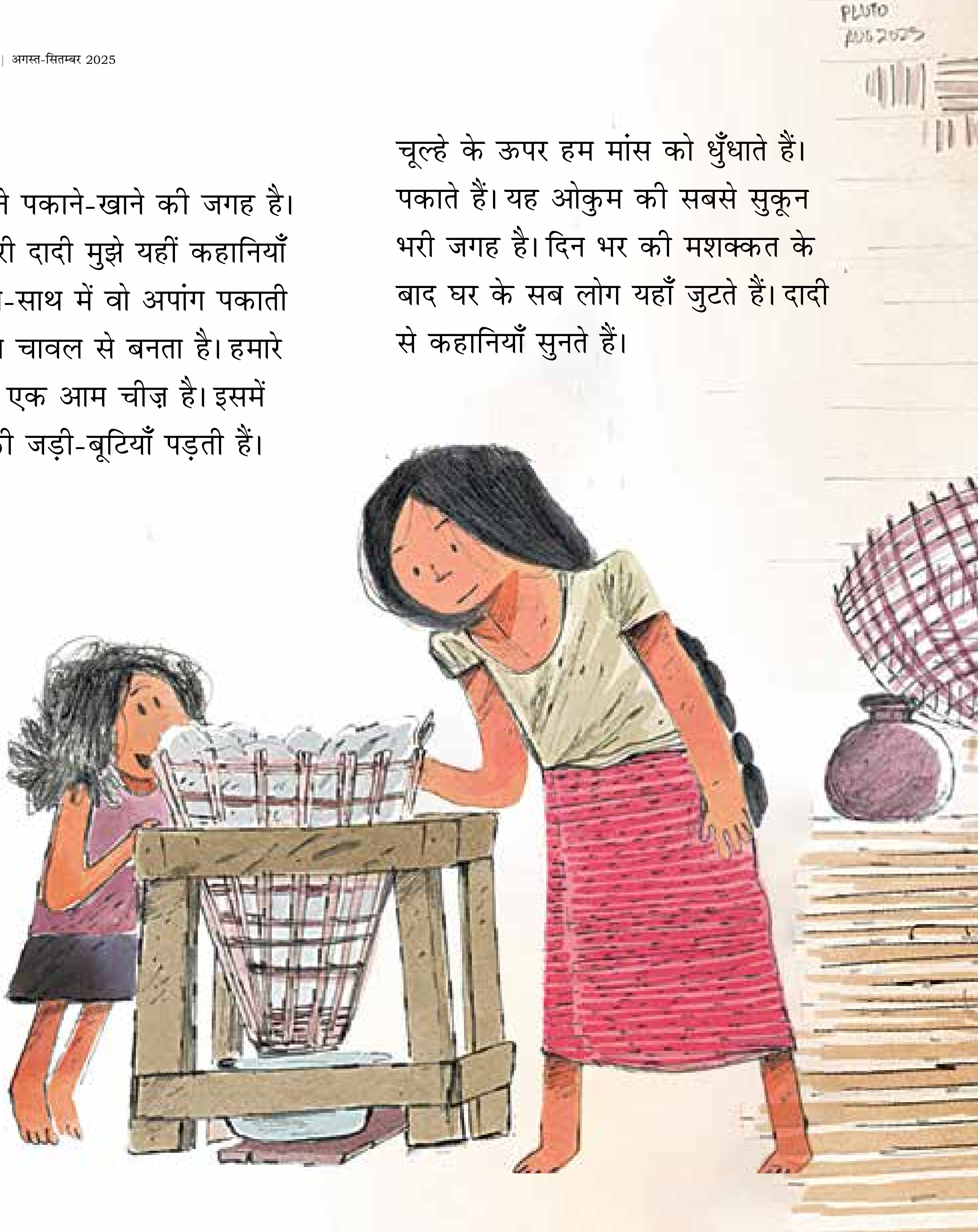

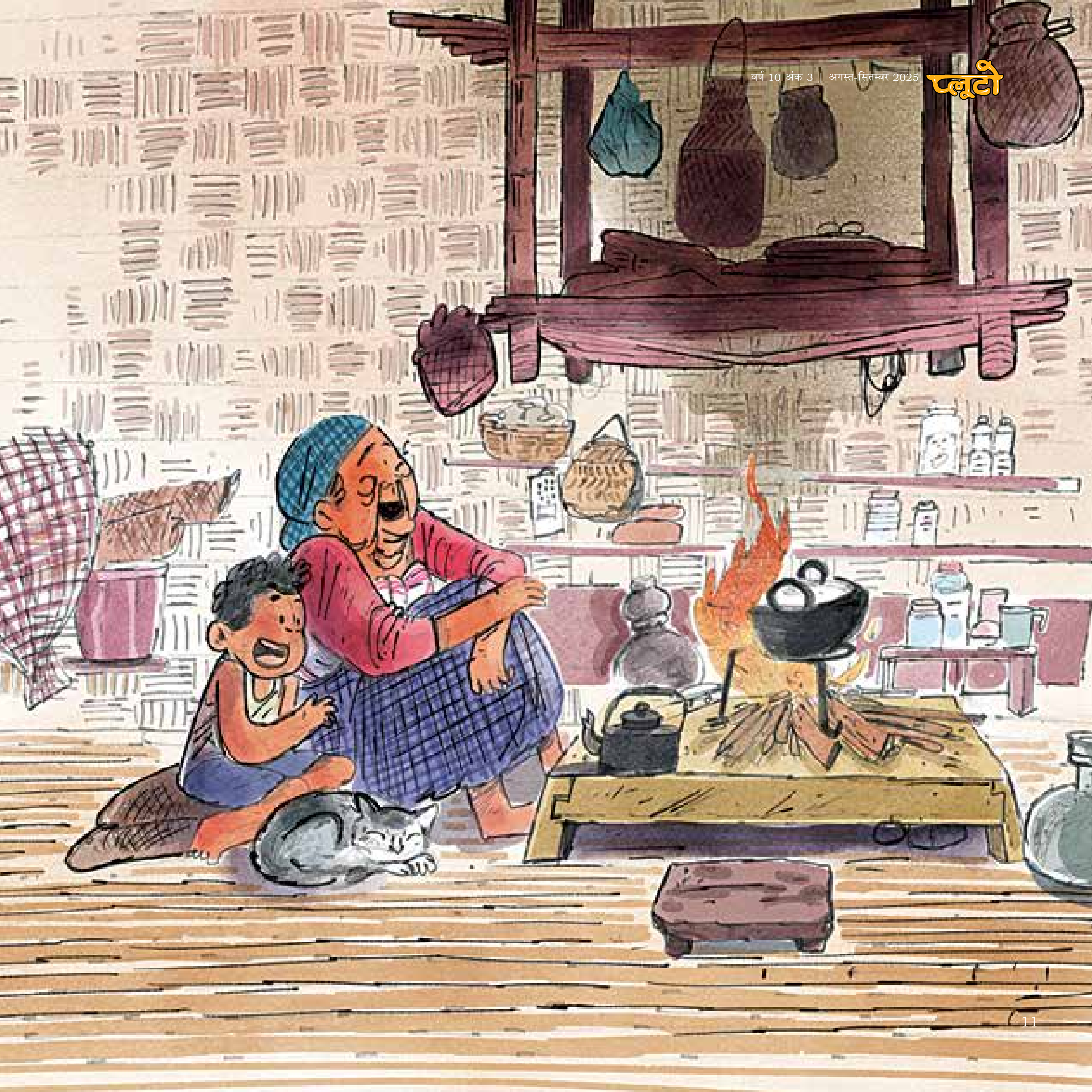

ततैया घर

पीयूष सेकसेरिया
चित्रः शुभम लखेरा

ये ऐसा तेज़ डंक मारते हैं कि ततैया सुनते ही दर्द से बिलबिलाना याद आ जाता है। पर वो डंक क्यों न मारें! इसी से तो वो अपने को और अपने घर को बचा सकते हैं।

ततैये बहुत तरह के होते हैं।

कुछ हैं जो अकेले रहते हैं। ये चार तरह से घर बनाते हैं-

1 कोई मिट्टी को खोदकर सुरंगें बनाते हैं। और वहीं अण्डे देते हैं।

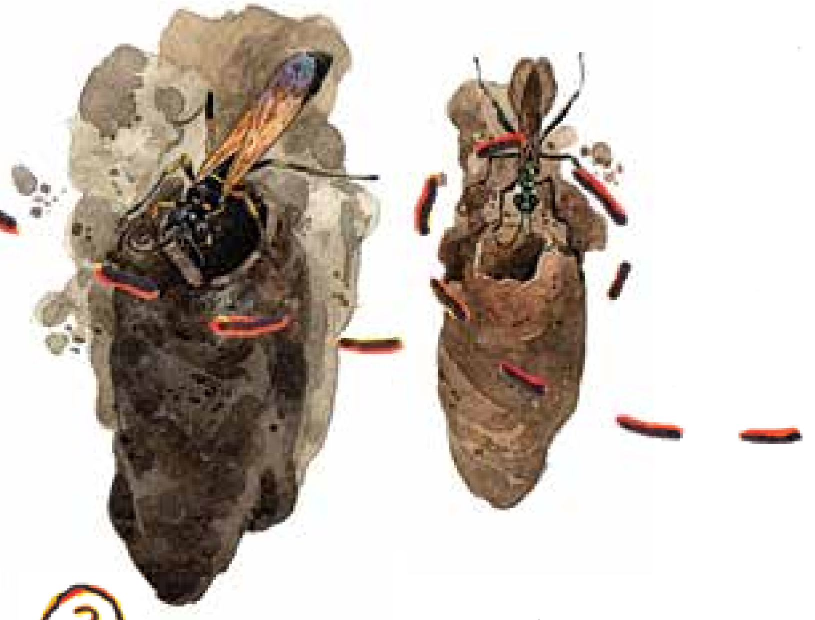

2 कोई मिट्टी ढो-ढोकर लाते हैं। और उससे घर बनाते हैं। टहनियों या दीवारों पर चिपके ट्यूब या मटके जैसे घर तुमने भी देखे होंगे ।

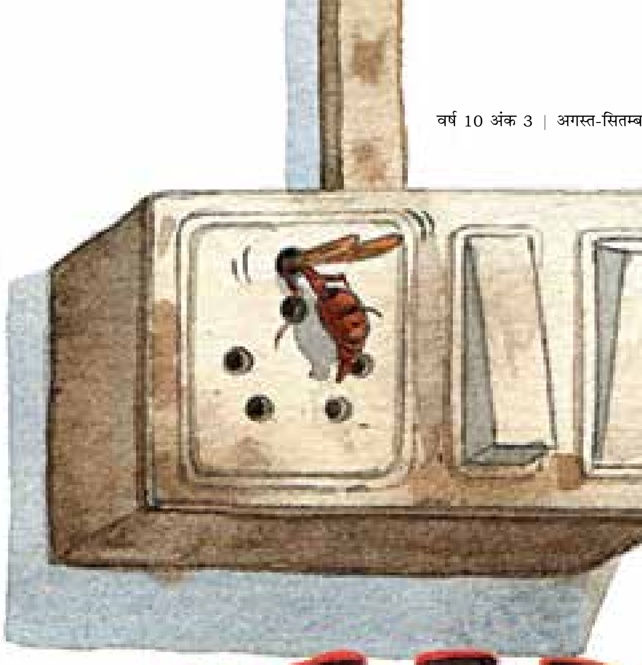

4 ये ततैए खुद घर नहीं बनाते। जहाँ कहीं सुराख दिखें, वहीं रहने लगते हैं। सड़ती लकड़ियों में। खोखली टहनियों में। पत्थर की दीवारों में। कभी-कभी तो दूसरे ततैयों के ज़मीन में बने सुराखों में भी ये अपना डेरा जमा लेते हैं। इन सुराखों में रहने वाले इन्हें छोड़कर जा चुके होते हैं। पक्के मकानों में रहना पसन्द करने वाले ततैये प्लगों के सुराखों में रहने लगते हैं।

3 जो ततैये अकेले नहीं रहते, वो मधुमक्खी के छत्तों जैसे घर बनाते हैं।

बारहसिंगा का घोंसला

अजिंक्य देशमुख | चित्रः प्रशान्त सोनी

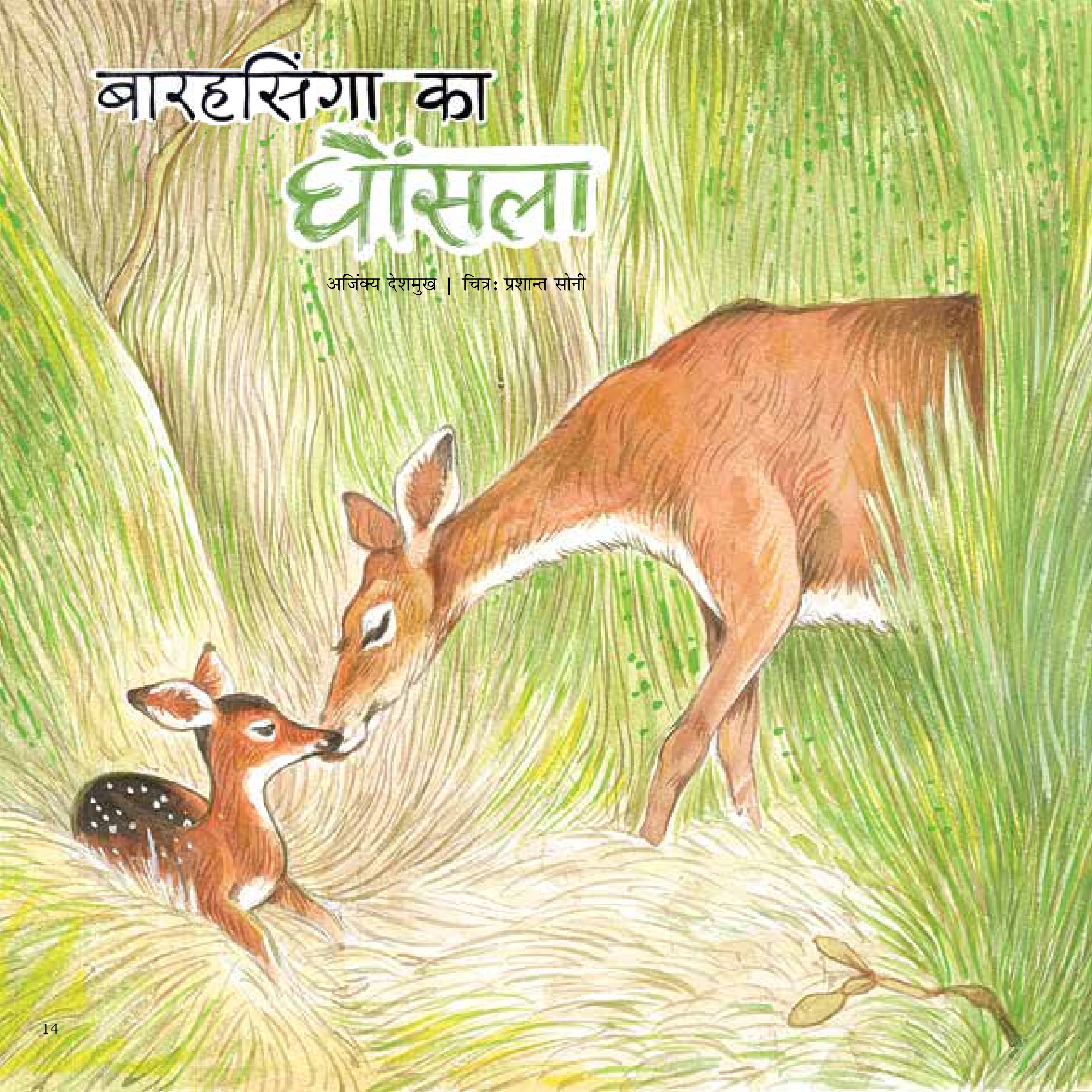

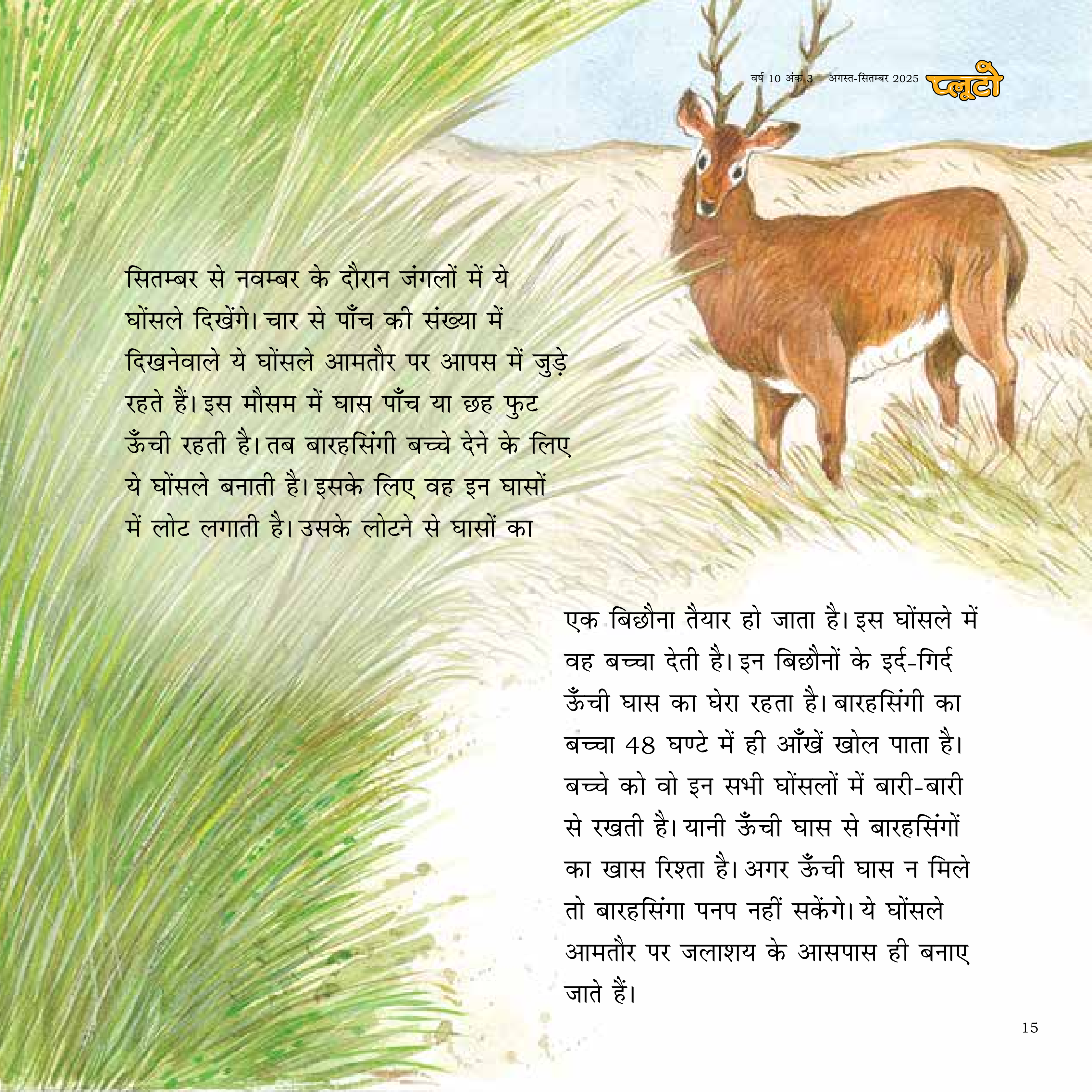

सितम्बर से नवम्बर के दौरान जंगलों में ये घोंसले दिखेंगे। चार से पाँच की संख्या में दिखनेवाले ये घोंसले आमतौर पर आपस में जुड़े रहते हैं। इस मौसम में घास पाँच या छह फुट ऊँची रहती है। तब बारहसिंगी बच्चे देने के लिए ये घोंसले बनाती है। इसके लिए वह इन घासों में लोट लगाती है। उसके लोटने से घासों का एक बिछौना तैयार हो जाता है। इस घोंसले में वह बच्चा देती है। इन बिछौनों के इर्द-गिर्द ऊँची घास का घेरा रहता है। बारहसिंगी का बच्चा 48 घण्टे में ही आँखें खोल पाता है। बच्चे को वो इन सभी घोंसलों में बारी-बारी से रखती है। यानी ऊँची घास से बारहसिंगों का खास रिश्ता है। अगर ऊँची घास न मिले तो बारहसिंगा पनप नहीं सकेंगे। ये घोंसले आमतौर पर जलाशय के आसपास ही बनाए जाते हैं।

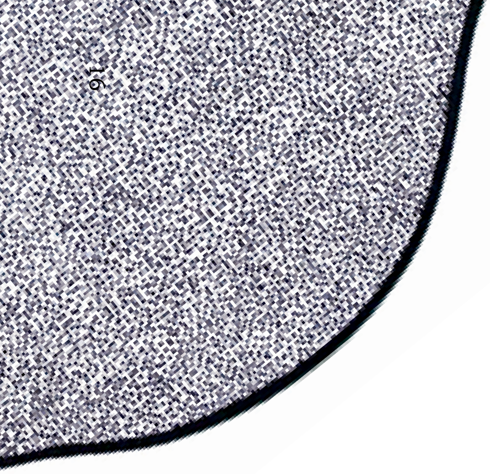

हाथी

चित्र: भज्जू श्याम

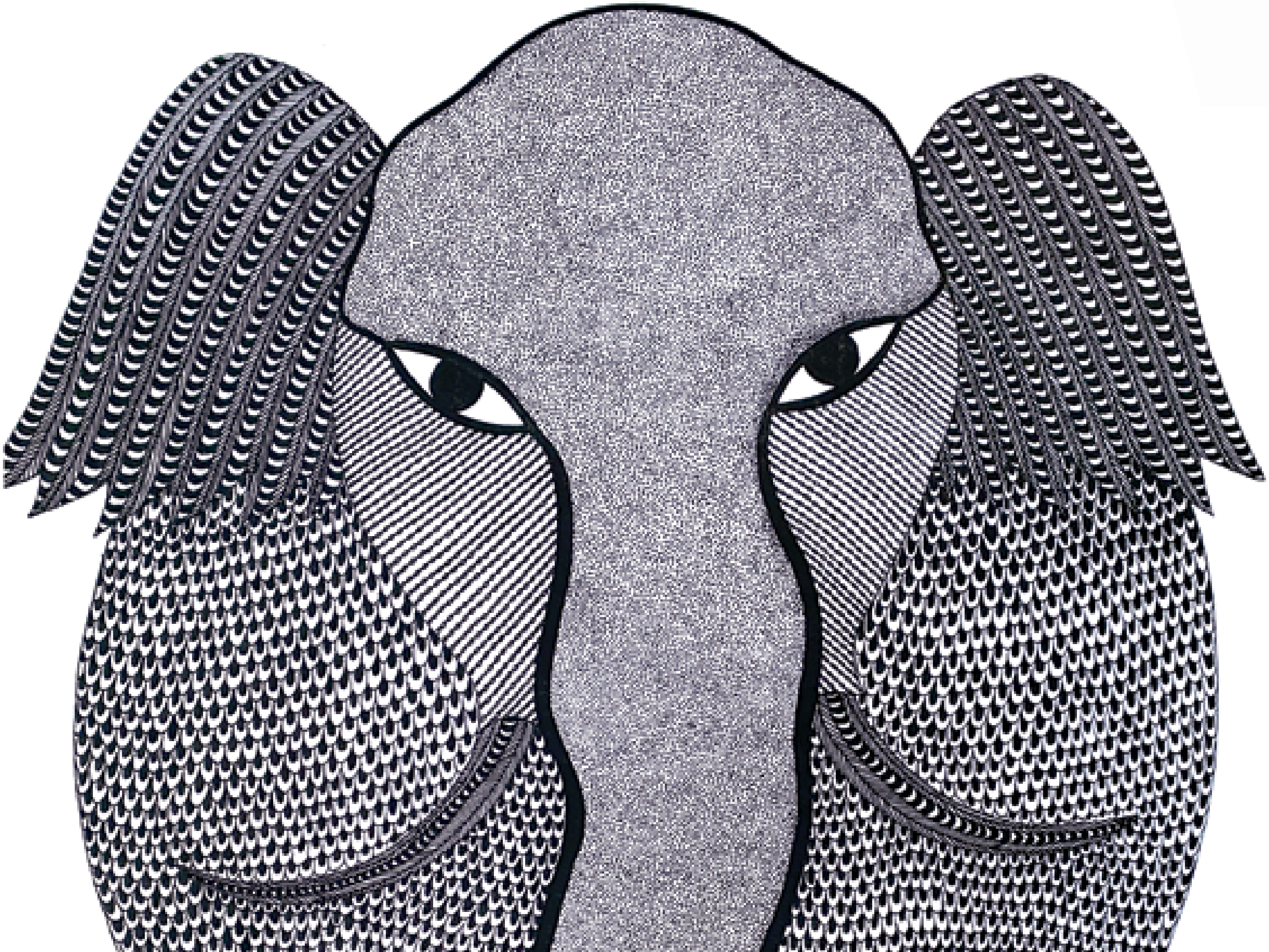

हाथी कहाँ रहता है? हाथी जहाँ भी रहे, वह दिखता रहता है। उस जैसा और कोई नहीं।

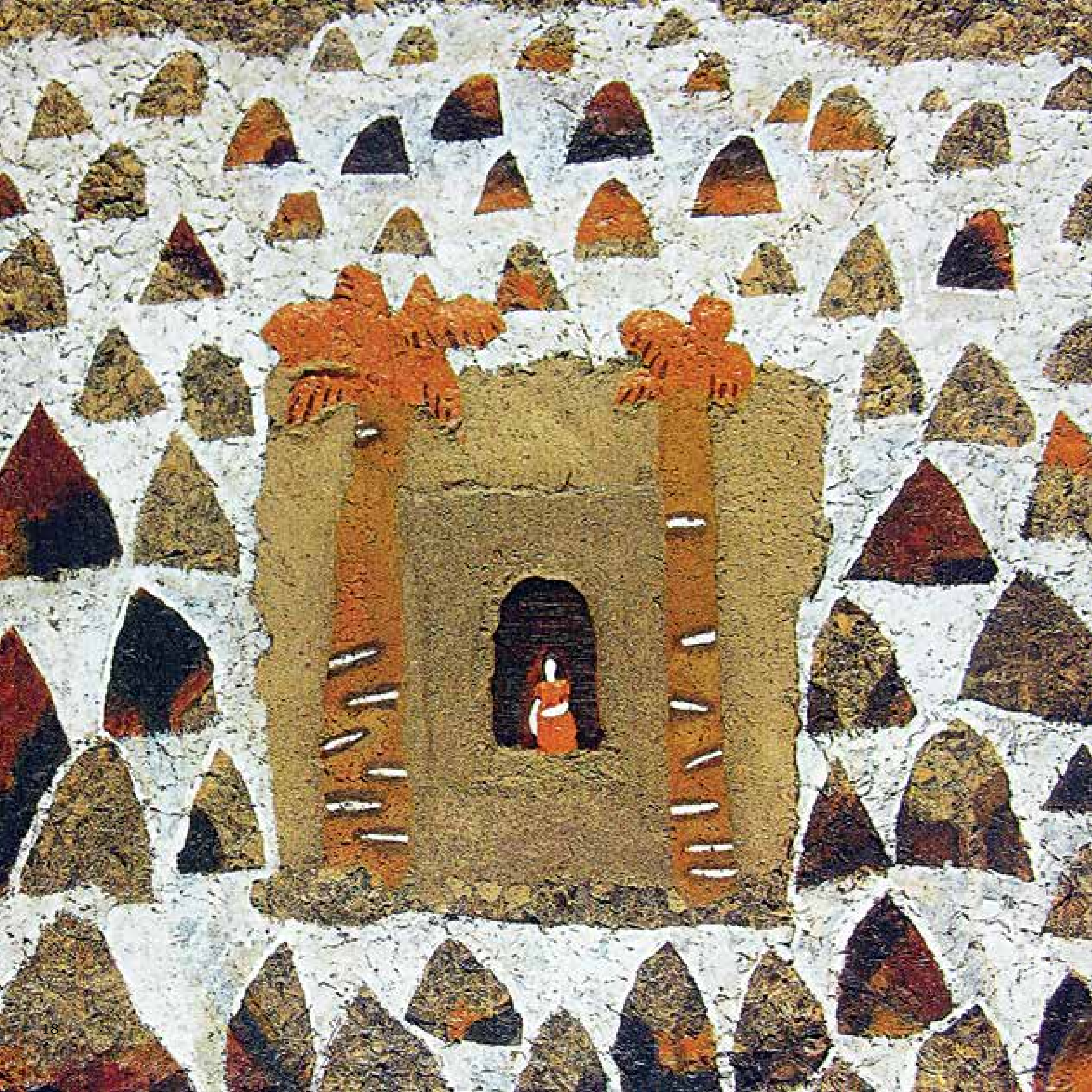

घर

मंजरी चक्रवर्ती

यह मेरा घर है। उसके आसपास पेड़ हैं। पेड़ पर अभी कोई फल नहीं हैं। शायद खजूर लगते होंगे। पककर मीठे होते होंगे।
आसपास कोई नहीं है। सब कहाँ चले गए? उनके घर भी चले गए?
घर के आसपास रेत के टीले ही टीले हैं। रेत ही रेत है। दिन में गरम हवा बहती है। और रात को ठण्डी। गर्मी से बचने दिन में छोटे जीव रेत में घुस जाते हैं। रात में बाहर निकलते हैं।

यह चित्र बहुत साल पहले मैंने अखबार से बनाया था। पुराने अखबार फाड़कर चिन्दी-चिन्दी कर लिए थे। फिर उनको रात भर पानी में गला रहने दिया। अगले दिन सिलबट्टे से पीस लिया। और छान लिया। पानी-पानी निकल गया। जो बचा उसमें मुलतानी मिट्टी और फेवीकॉल मिला लिया। खूब फेंट लिया। इससे गीली मिट्टी जैसी लुगदी मिली। उसी से मैंने यह बनाया है। यह बहुत बड़ी पेटिंग है। मेरे जितनी लम्बी, या तुम्हारे जितनी! इस घर में मैं खड़ी हूँ या तुम खड़े हो! शायद इन्तज़ार में कि खजूर कब पकेंगे। कब खाने को मिलेंगे।

चलो, आज एक नक्शा बनाते हैं

रुचि शाह

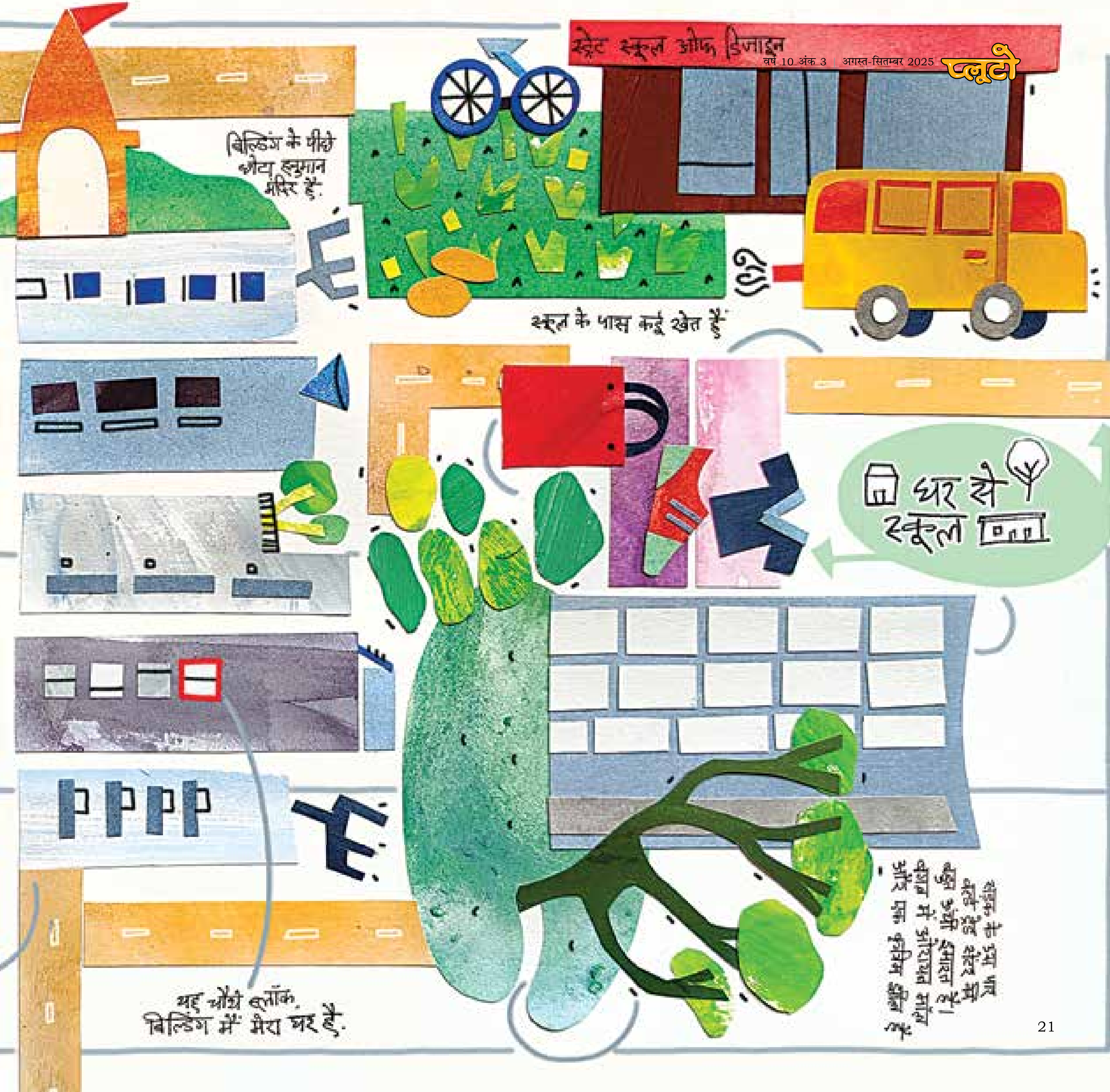
स्टेट स्कूल ऑफ डिज़ाइन
बिल्डिंग के पीछे छोटा हनुमान मंदिर है।
स्कूल के पास कई खेत हैं
घर से स्कूल
सड़क के उस पार वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की बहुत ऊँची इमारत है। बगल में ओरायन मॉल और एक कृत्रिम झील है।
यह चौथे ब्लॉक, बिल्डिंग में मेरा घर है।

हम कहाँ से शुरू करें...?

तुम्हारे आसपास किस तरह के पेड़-पौधे हैं?

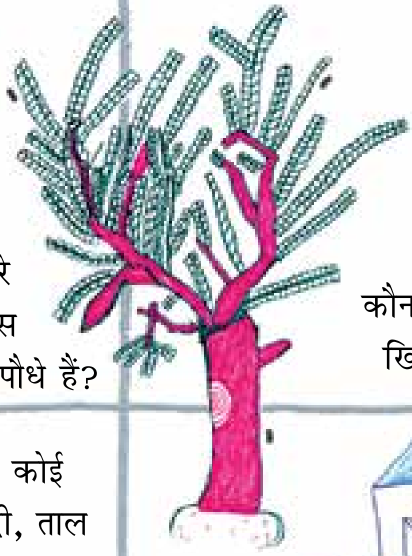

कौन से फूल खिले हैं?

रास्ते में कोई झील, नदी, ताल है?

पानी किस रंग का दिख रहा है?

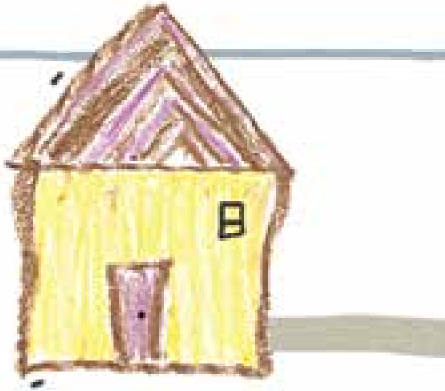

स्कूल कैसे जाते हो?

तुम्हारे घर का चित्र बनाना है। क्या तुमको लेने स्कूल बस आती है?

दिन का नक्शा बनाओगे तो देखो दिन में कौन-कौन नज़र आ रहा है?

रात के नक्शे में कल्पना करो कि क्या-क्या चीज़ें बदल जाएँगी... जैसे, रंग...

एक सूची बनानी होगी...देखी हुई चीज़ों में से किन-किन को तुम नक्शे में रखोगे।

सड़कों से शुरू करते हैं

नक्शा बनाने से पहले एक बार फिर सब चीज़ों पर गौर करना। कौन-कौन-सी चीज़ें तुम्हें खासतौर पर दिखती हैं। कौन-सी चीज़ों को तुम याद रखते हो। कई चीज़ें जुटानी पड़ेंगी - रंग, पेन, क्रेयॉन, स्याही, कागज़, गोंद, धागा। स्कूल के आसपास के पेड़-पौधों की पत्तियाँ, कंकड़-पत्थर आदि भी इस नक्शे में इस्तेमाल कर सकते हो। इन सब को चिपकाकर एक कोलाज बन जाएगा। नक्शा बनाकर हमें भेजना। कुछ को हम प्लूटो में प्रकाशित करेंगे। और तुम्हें कुछ अच्छी किताबों का उपहार मिलेगा।

चित्र: एलन शॉ

प्लूटो
किताब घर
मछली घर
प्लूटो: हमारा घर
चिड़िया घर
गिरजा घर
OK गिर गया
बिजली घर
हमारा घर किधर?

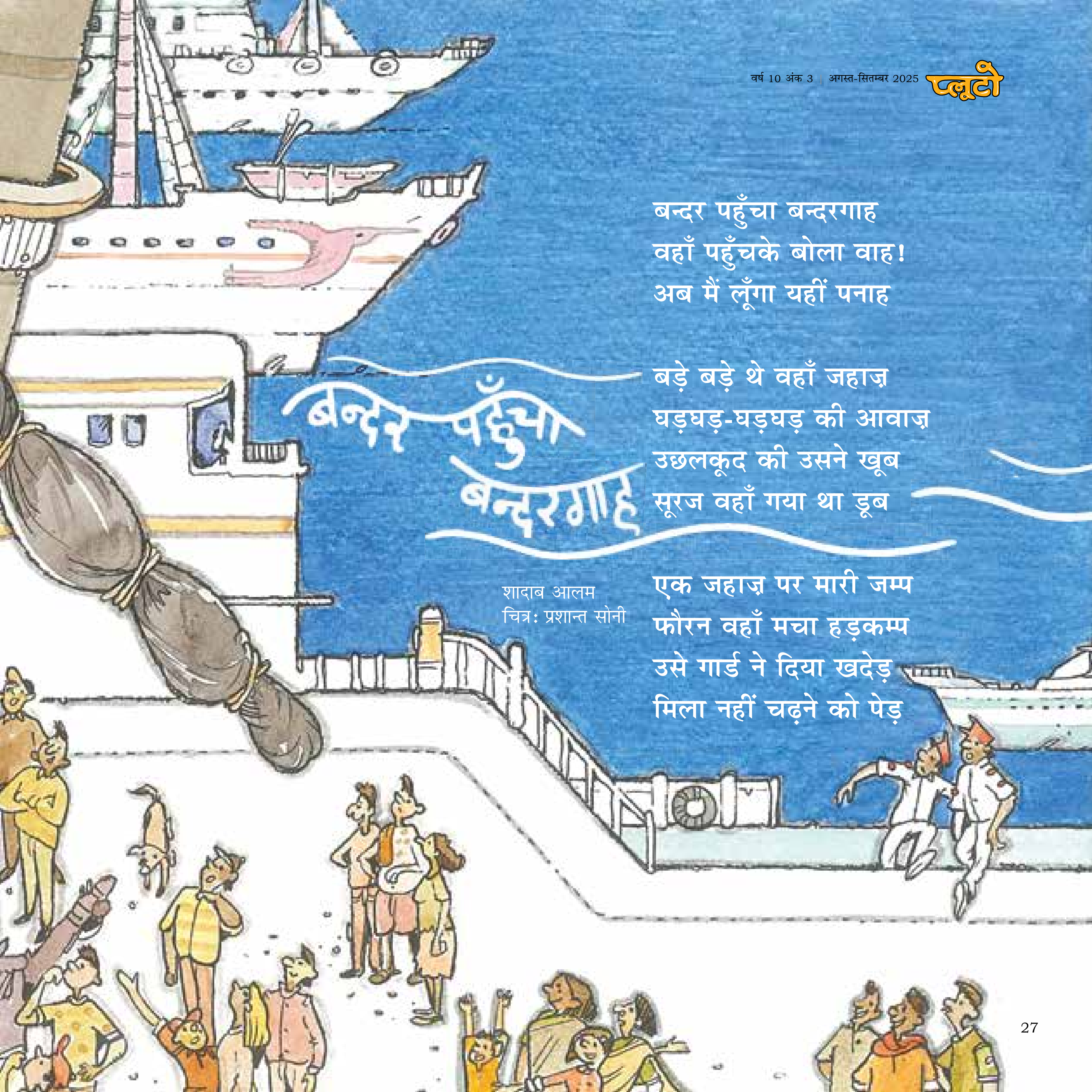

बन्दर पहुँचा बन्दरगाह

शादाब आलम
चित्रः प्रशान्त सोनी

बन्दर पहुँचा बन्दरगाह
वहाँ पहुँचके बोला वाह!
अब मैं लूँगा यहीं पनाह

बड़े बड़े थे वहाँ जहाज़
घड़घड़-घड़घड़ की आवाज़
उछलकूद की उसने खूब
सूरज वहाँ गया था डूब

एक जहाज़ पर मारी जम्प
फौरन वहाँ मचा हड़कम्प
उसे गार्ड ने दिया खदेड़
मिला नहीं चढ़ने को पेड़

चूहे को बुखार है

धर्मवीर
चित्र: हबीब अली

चूहे को बुखार हुआ
तो चूहा बोला,
उई- उई -उई
तभी उसे छह छींकें आईं
छुईं - छुईं - छुईं
छुईं - छुईं - छुईं

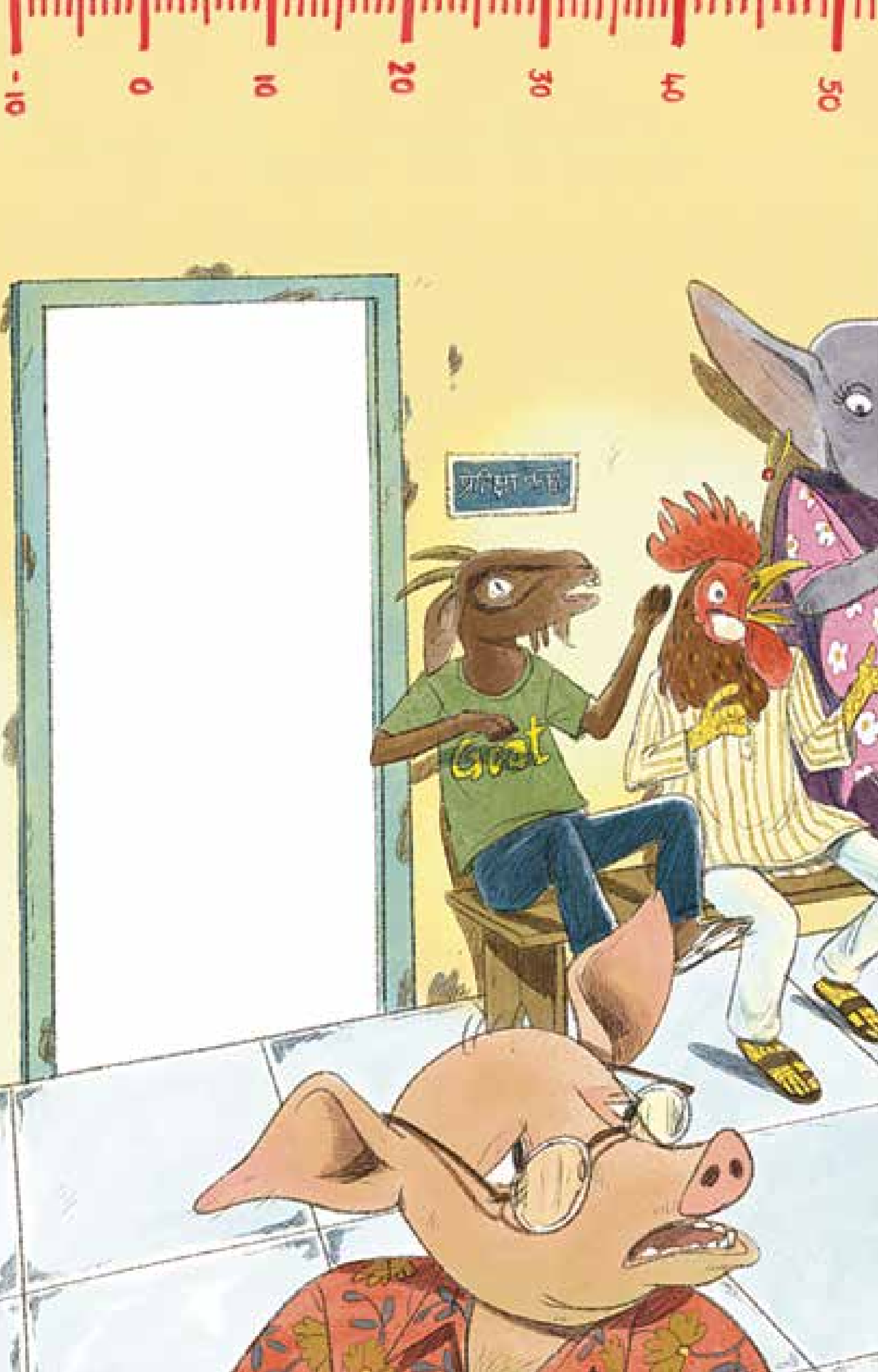

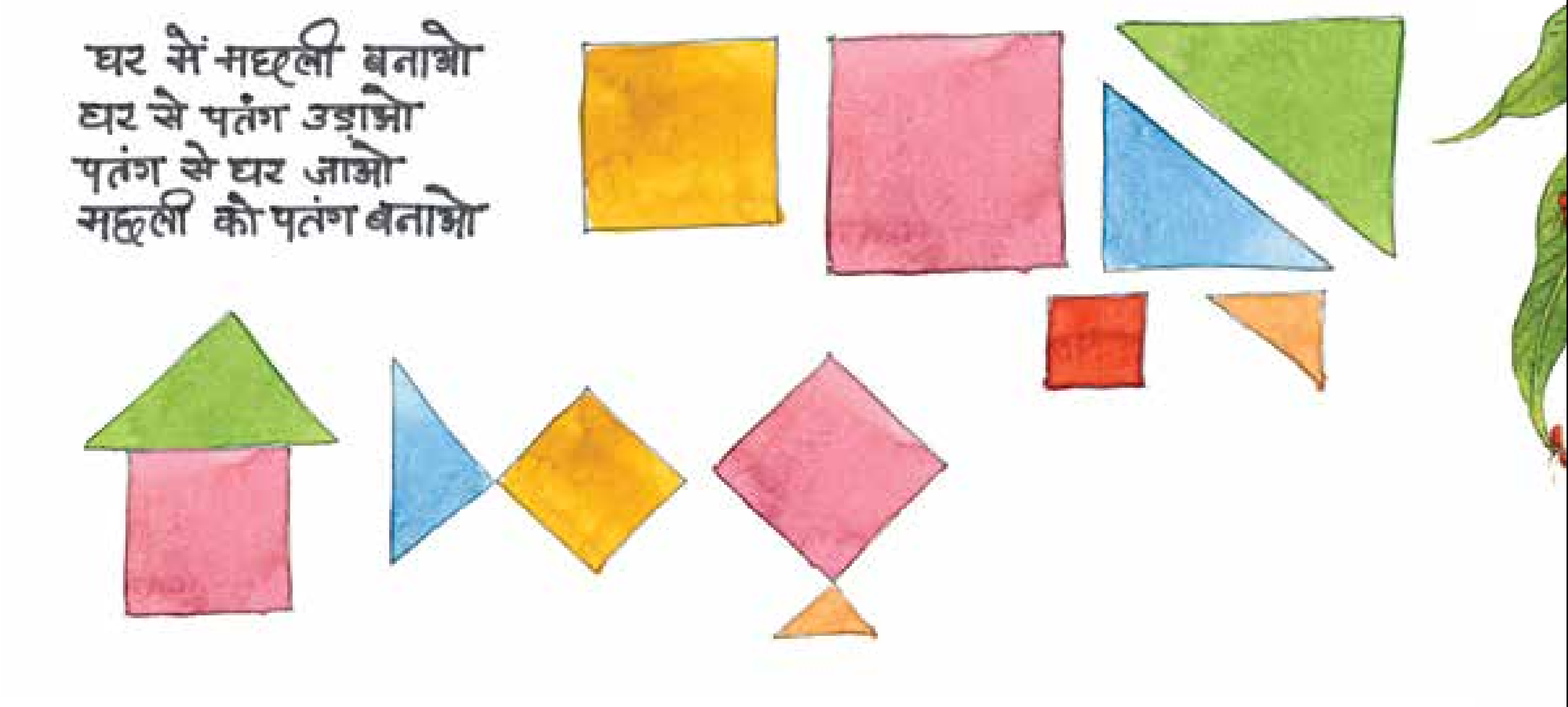

प्लूटो

इकतारा द्वारा विकसित

सम्पादक
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

उपसम्पादक
तज़ीन अली

वितरण
अनीता शर्मा
सुनील भाटी

डिज़ाइन
आस्क - आर्ट डिज़ाइन कलेक्टिव

आवरण चित्र
एलन शॉ

दुमाही बाल पत्रिका

अवधि	अंक	सदस्यता दर (पंजीकृत डाक शुल्क सहित)
एक साल	6	₹600/-
दो साल	12	₹1150/-
तीन साल	18	₹1650 /-

एक प्रति - ₹75 (डाक खर्च अतिरिक्त)

भुगतान विवरण:
बैंक ड्राफ्ट/चैक - इकतारा ट्रस्ट
Ektara Trust नई दिल्ली के नाम देय ।

ऑनलाइन ट्रांसफर
एच.डी.एफ.सी. बैंक, बी-78 डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
खाता नम्बर - **50100688089124, IFSC: HDFC0000134** में भेजें।

ऑनलाइन खरीद की लिंक
www.ektarashop.in

भुगतान और वितरण की पूरी जानकारी
publication@ektaraindia.in पर दें।

इकतारा– तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केन्द्र
2, मालवीय नगर, भोपाल 462003

फोन **0755-4939472, 9109915118, 9630097118**

ई-मेल **pluto@ektaraindia.in**

वेबसाइट **www.ektaraindia.in**

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा इकतारा ट्रस्ट - तक्षशिला एजुकेशन सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर सर्विसेज़, शेड नम्बर 92, डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित। सम्पादक - सुशील शुक्ल

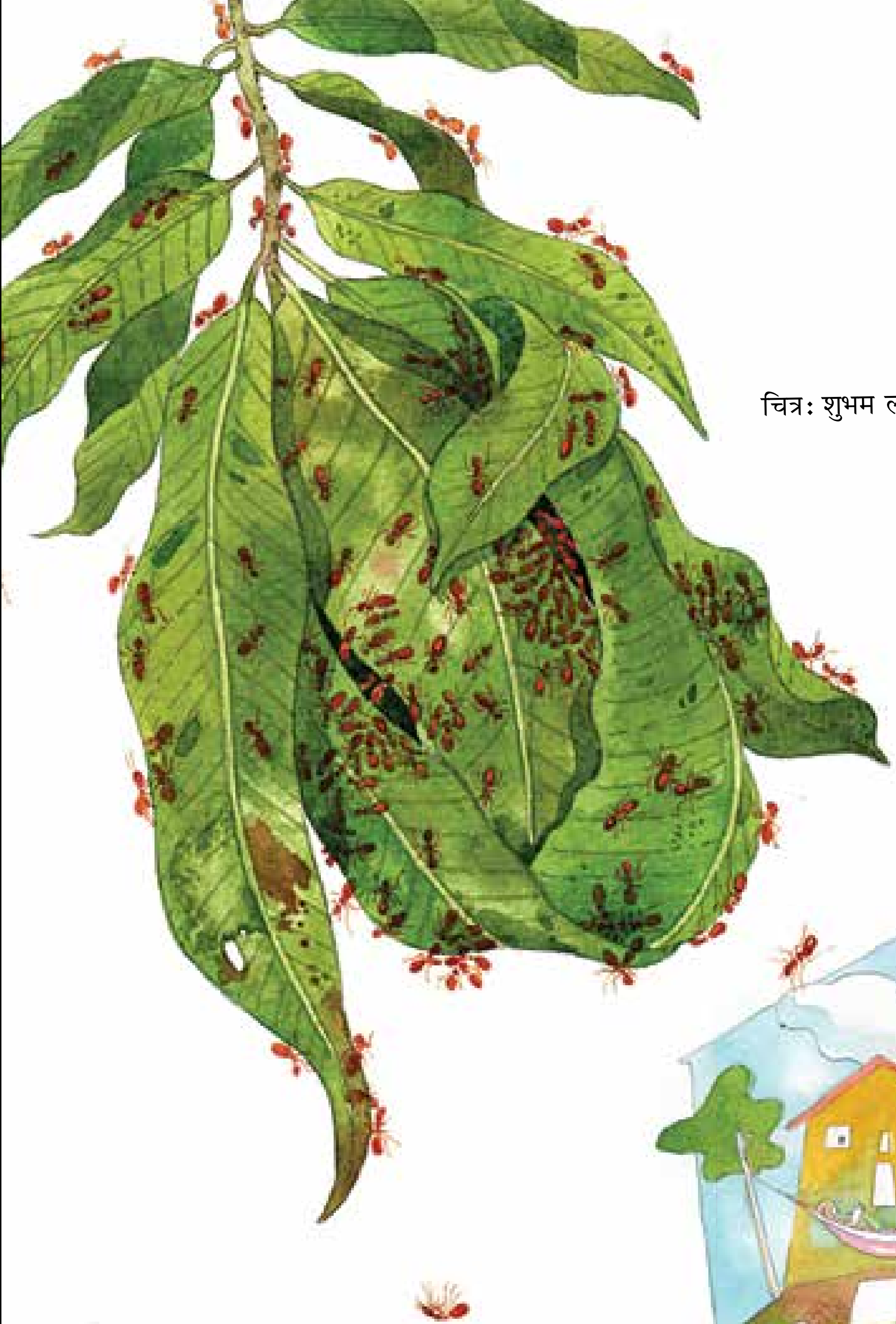

चित्रः शुभम लखेरा

आम के अलावा ये घोंसले और किन पेड़ों पर दिखते हैं?

चित्रः एलन शॉ,
हृदय श्वेता तन्मय, सात वर्ष,
पांढुर्णा, मध्यप्रदेश

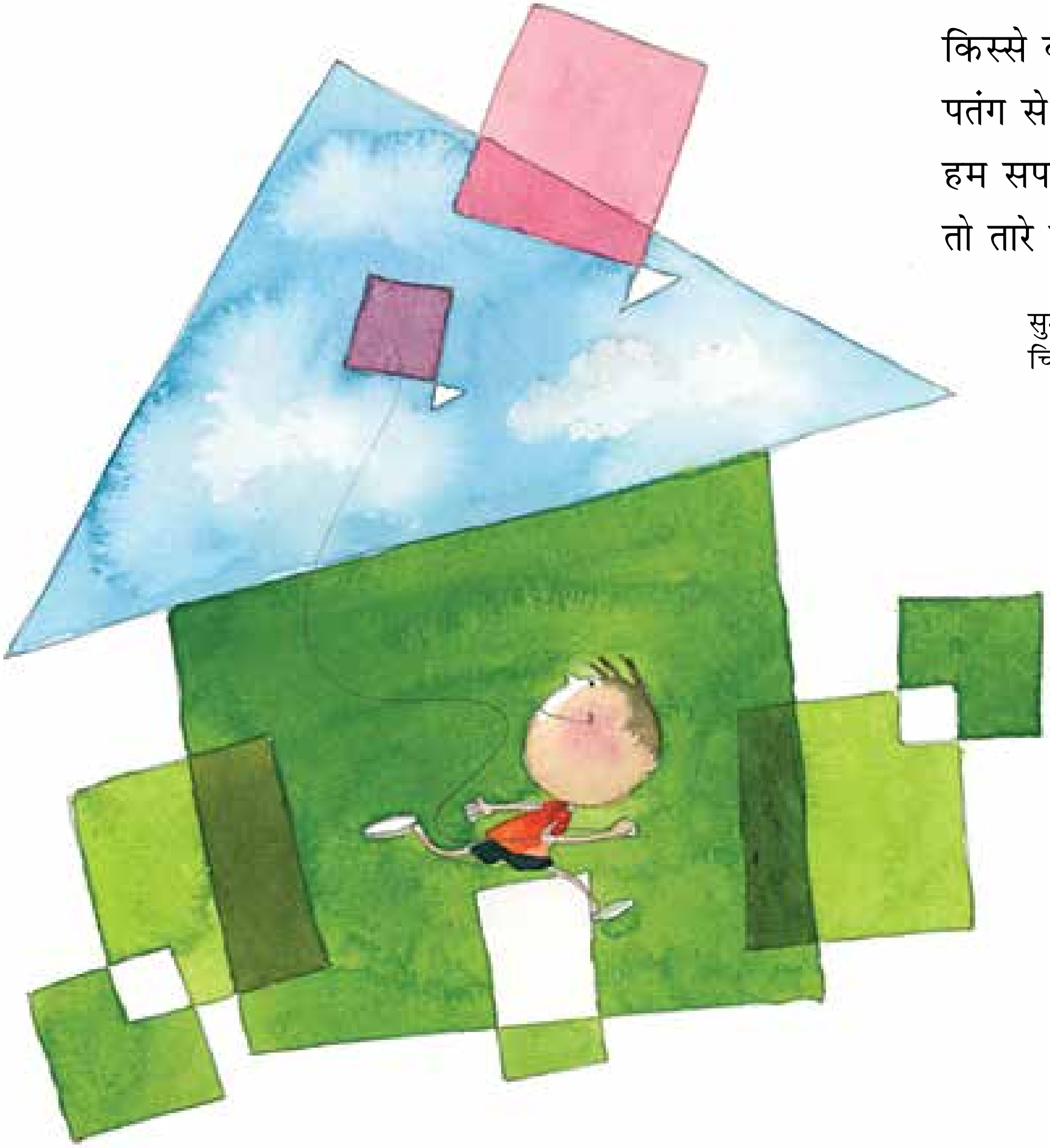

किस्से बादल के
पतंग से सुनते हैं
हम सपने बुनते हैं
तो तारे सुनते हैं

सुशील शुक्ल
चित्र: एलन शॉ

आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका